महर्षि महेश योगी वैदिक विश्वविद्यालय

Course Outcomes

Name of the Course	Name of the Department
आचार्य स्तर	**वेद–विभाग**

महर्षि महेश योगी वैदिक विश्वविद्यालय की स्थापना १९९५ में हुई। विश्वविद्यालय के वेद-विभाग में सम्प्रति शुक्लयजुर्वेद संचालित है जिसमें आचार्य कक्षा में शुक्लयजुर्वेद का अध्यापन कराया जाता है, जिसमें शुक्लयजुर्वेद संहिता के प्रकृति-पाठ के साथ-साथ अष्टविकृतियों का भी अध्यापन कराया जाता है। शुक्लयजुर्वेद संहिता के महीधरभाष्य का अनुसरण कर इसकी व्याख्या भी अध्यापित कराई जाती है। शुक्लयजुर्वेद का ब्राह्मण (शतपथ ब्राह्मण), उपनिषद, निरुक्त, प्रातिशाख्य, श्रौतसूत्र, गृह्यसूत्र, शुल्वसूत्र, वैदिक व्याकरण, वैदिक साहित्य का इतिहास एवं वेद, उपवेद, वेदांग, उपांग, ब्राह्मण, आरण्यक, उपनिषद्, प्रातिशाख्य पर परमपूज्य महर्षि जी के विचारों को भी अध्यापित कराया जाता है।

परम पूज्य महर्षि जी के अनुसार यजुर्वेद के चेतना का गुण प्रवाहमयिता है। यजुर्वेद सम्बन्धी चेतना के स्पन्दन शरीर में उपलब्ध है। यजुर्वेद के स्पन्दनों से शरीर के जिस भाग की रचना हुई है उसको ऑग्ल भाषा में प्रोसेसिंग सिस्टम कहते हैं।

वैदिक वाङ्मय के उपर्युक्त विषयों का अध्ययन कर छात्र वैदिक वाङ्मय का उत्कृष्ट विद्वान् हो जाता है। विश्वविद्यालय अनुदान आयोग की कनिष्ठ अध्येतावृत्ति (श्रत्थ) परीक्षा उर्त्तीण कर शोधवृत्ति प्राप्त करते हुए अनुसंधान (विद्यावारिधि) कर किसी भी विश्वविद्यालय में अध्यापन कार्य कर सकता है। यदि किसी कारण वश शासकीय सेवा में नहीं आता है तो अनुष्ठान, यज्ञ इत्यादि करके जीविकोपार्जन कर सकता है। वैदिकवाङ्मय के पूर्ण अध्ययन से छात्रों का कौशल विकास होता है जिससे वह स्वयं दूसरों को भी रोजगार दे सकता है। यज्ञादि के माध्यम से पर्यावरण भी शुद्ध होता है, जिससे सभी मानव जाति का कल्याण होता है।

परम पूज्य महर्षि जी के सत्प्रयासों का ही यह फल है कि न केवल मध्यप्रदेश में , भारत वर्ष में प्रत्युत सम्पूर्ण विश्व में लुप्तप्राय वेदपाठ एवं यज्ञानुष्ठान इत्यादि की क्रियायें सम्प्रति विधिवत् संचालित हो रही हैं।

Name of the Course	Name of the Department
आचार्य स्तर	**यज्ञानुष्ठान–विभाग**

महर्षि महेश योगी वैदिक विश्वविद्यालय की स्थापना १९९५ में हुई। विश्वविद्यालय के यज्ञानुष्ठान-विभाग में सम्प्रति आचार्य कक्षा में यज्ञानुष्ठान का अध्यापन कराया जाता है, जिसमें शुक्लयजुर्वेद संहिता में प्रतिपादित यज्ञीय अवधारणाओं के साथ-साथ श्रौतयाग, स्मार्तयाग, देवियाग, देवप्रतिष्ठा, गृह्यसूत्र, धर्मशास्त्र, प्रभृति विषयवस्तुओं का अध्यापन कराया जाता है।

Name of the Course	Name of the Department
Acharya Sanskrit	**Sanskrit Department**

1. राज्य प्रशासनिक सेवाओं में महत्वपूर्ण उत्तरदायित्व का निर्वाह करना।
2. सैनिक स्कूलों में षिक्षण के दायित्व को अपनाना।
3. राष्ट्र तथा समाज में आदर्श मानव के गुणों का विकास।
4. साहित्यकार, समाज सुधारक बनकर समाज को आदर्ष दिषा प्रदान करना।
5. भाषागत संगणक षिक्षक बनकर वृत्ति प्राप्त करना।
6. भारतीय सेना में धर्मगुरु के पद का निर्वाह कर देष सेवा करना।
7. स्नातक पास छात्र–छात्राएं रेलवे, पुलिस तथा अन्य राज्यों की सामान्य सेवाओं में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते है।
8. विश्व के अनेक देषों में भाषा षिक्षक बनकर भारत के अतुल्य वैदिक ज्ञान का विष्व पटल पर गौरव बढ़ा सकते है।
9. भाषा षिक्षक बनकर छात्रों को ज्ञान देना।
10. स्कूल, कॉलेज, विष्वविद्यालय में संस्कृत अध्यापन द्वारा महानतम् भारतीय सभ्यता तथा संस्कृति के गुणों को छात्र छात्राओं एवं नागरिकों में जागृत करना।
11. सामाजिक एवं राष्ट्रीय, एकता, समरसता, परस्पर सद्भाव, मैत्री तथा भाईचारे के विभिन्न गुणों के प्रति छात्र–छात्राओं को प्रेरित करना।
12. भाषा टाईपिस्ट बनकर भारत के समृद्ध साहित्य की सेवा करना।
13. भाषा अनुवादक बनकर अन्य भाषीय जनों को संस्कृत साहित्य के गौरव पूर्णज्ञान से अवगत करना।
14. जीवन उपयोगी आदर्ष संस्कारों एवं आदर्ष नागरिक गुणों का जन–जन में विकास करना।
15. सामाजिक, आध्यामिक, राष्ट्रीय मूल्यों के विकास तथा उनके पालन के लिये नागरिकों को प्रेरित करना।

Name of the Course	Name of the Department
B.A B.Ed	**Education Department**

Co1. Analyze the secondary school curriculum of carious schools affiliated to different boards.
Co2. Make use of subject specific pedagogical knowledge and skill.
Co3. Practice skills and approaches for enhancing understanding of subject matter knowledge to be taught in
Co4. Appreciate the role of teacher in prevailing socio-cultural and political system in general and education system in particular.

Name of the Course	Name of the Department
B.El.Ed	**Education Department**

CO-1 The course makes one an expert in Elementary Education which is a specialization in itself and one can expand his/her
CO-2 A candidate can pursue Post-graduate and research studies in education and related disciplines like education, linguistics, psychology, languages, history, social work, sociology, mathematics and political science.
CO-3 The course provides the ability to teach and research in elementary education in the government and non-government sector
CO-4 One can get placement in government and private schools as resourcefully qualified elementary school teachers.
CO-5 Others can work in other related fields like linguistics, psychology, languages, history, social work, sociology, mathematics and political science.

Name of the Course	Name of the Department
B.Sc(CS)	**Computer Science**

Co 1 Lesson planning makes the work regular, organized and more systematic to the student in the teaching learning aspect

Co 2 it include confidence and the ability of visualization in the students to teach in a better ways

Co3 Students are able to know about the lesion plan
Co 4 student can identify the characteristics of a good lesion plan
Co 5 student can help in making correlation between the concepts with the pupil environment.
Co 6 key element of lesion plan can be easily explained by the students

Name of the Course	Name of the Department
B.A. Sanskrit	**Sanskrit Department**

1. उद्घोषक, उपदेषक बनकर मानव सेवा के प्रति समाज को प्रेरित करना।
2. भाषा षिक्षक बनकर छात्रों को ज्ञान देना।
3. राज्य प्रशासनिक सेवाओं में महत्वपूर्ण उत्तरदायित्व का निर्वाह करना।
4. सैनिक स्कूलों में षिक्षण के दायित्व को अपनाना।
5. भाषागत संगणक षिक्षक बनकर वृत्ति प्राप्त करना।
6. भारतीय सेना में धर्मगुरु के पद का निर्वाह कर देष सेवा करना।
7. स्नातक पास छात्र–छात्राएं रेलवे, पुलिस तथा अन्य राज्यों की सामान्य सेवाओं में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते है।
8. विश्व के अनेक देषों में भाषा षिक्षक बनकर भारत के अतुल्य वैदिक ज्ञान का विष्व पटल पर गौरव बढ़ा सकते है।
9. साहित्यकार, समाज सुधारक बनकर समाज को आदर्ष दिषा प्रदान करना।
10. स्कूल, कॉलेज, विष्वविद्यालय में संस्कृत अध्यापन द्वारा महानतम् भारतीय सभ्यता तथा संस्कृति के गुणों को छात्र छात्राओं एवं नागरिकों में जागृत करना।
11. सामाजिक एवं राष्ट्रीय, एकता, समरसता, परस्पर सद्भाव, मैत्री तथा भाईचारे के विभिन्न गुणों के प्रति छात्र–छात्राओं को प्रेरित करना।
12. भाषा टाईपिस्ट बनकर भारत के समृद्ध साहित्य की सेवा करना।
13. भाषा अनुवादक बनकर अन्य भाषीय जनों को संस्कृत साहित्य के गौरव पूर्णज्ञान से अवगत करना।
14. राष्ट्र तथा समाज में आदर्श मानव के गुणों का विकास।
15. पुरातन एवं सनातन हिन्दू सभ्यता के विविध आयमों का समाज को ज्ञान देना।
16. सामाजिक, आध्यामिक, राष्ट्रीय मूल्यों के विकास तथा उनके पालन के लिये नागरिकों को प्रेरित करना।
17. ध्यान, आध्यात्मिक, धार्मिक व सात्विक जीवन के प्रति लोगों को प्रेरित करना।
18. जीवन उपयोगी आदर्ष संस्कारों एवं आदर्ष नागरिक गुणों का जन–जन में विकास करना।

Name of the Course	Name of the Department
BCA	**Computer Science Department**

CO1: A Student studding computer technology will learn to technical standard.
CO2: Computer technology or computer science is integral part of modern education.
CO3: Computer science student have derived technical knowledge and education system.
CO4: Computer science is popular subject among students especially for those who interested in technology.
Co6 Lesson planning makes the work regular, organized and more systematic to the student in the teaching learning aspect
Co7 it include confidence and the ability of visualization in the students to teach in a better ways
Co8 Students are able to know about the lesion plan
Co9 student can identify the characteristics of a good lesion plan
Co10 student can help in making correlation between the concepts with the pupil environment.
Co11 key element of lesion plan can be easily explained by the students

Name of the Course	Name of the Department
B.Com(CA)	**Department Commerce**

CO1 A student studying accountancy will learn the art of recording classifying and summarizing

CO2 Accountancy is integral part of commerce stream.

CO3 Hopefully our government will take important steps to promote commerce education in the country.

CO4 Commerce student have derived some benefits lecturing seeks to offer a large amount of knowledge in capsule form.
CO5 Commerce is popular subject among student especially for those, who wants to pursue career in banking, trade and
CO6 Critically evaluate new ideas, research, findings and problem solving through the application of appropriate, theories,
CO7 Strategic and critical thinking in relation to business and commerce related issues.

Name of the Course	Name of the Department
DCA	**Department of computer science**

Sample course outcome of lesson plan in teaching learning strategies

Co 1 Lesson planning makes the work regular, organized and more systematic to the student in the teaching learning aspect

Co 2 it include confidence and the ability of visualization in the students to teach in a better ways
Co3 Students are able to know about the lesion plan
Co 4 student can identify the characteristics of a good lesion plan

Co 5 student can help in making correlation between the concepts with the pupil environment.
Co 6 key element of lesion plan can be easily explained by the students

Name of the Course	Name of the Department
Economics	**Department of Social Science**

This course will help in developing an in-depth understanding of the Indian economy- its history, recent developments, and impending challenges. The participants will become proficient in understanding and analyzing macroeconomic developments and policy. They will also become familiar with the current dominant thoughts and tools used for economic policy making and research.

Name of the Course	Name of the Department
हिन्दी भाषा	**Department of Indian Language**

वर्तमानपरिदृश्य मेंहिन्दीभाषा अध्ययन की उपयोगिता एवंमहत्वनिम्नलिखितहैं-
१. भारत के संविधानमेंहिन्दीभाषाकोराष्ट्रभाषाकादर्जादियागयाहै।अतः राष्ट्रभाषाकाज्ञानप्राप्तकरनासबकेहितमेंहै।
२. हिन्दीभाषा के ज्ञानसेसामान्य ज्ञानकोविकसितकियाजाताहै।
३. भाषाशिक्षासेरोजगार के अधिकअवसरोंकोप्राप्तकियाजासकताहै।
४. समूचेराष्ट्रमेंभावात्मक एवंराष्ट्रीय एकतास्थापितकरनेमेंराष्ट्रभाषामहत्वपूर्णभूमिकानिभातीहै।
५. सुसंस्कृतनागरिककानिर्माणकरनेमेंभाषा की भूमिकाअत्यन्तमहत्वपूर्णहोतीहै।
६. मावनकासर्वांगीणविकासहीशिक्षाकाउद्देश्य हैऔरइसउद्देश्य की प्राप्ति के लिए हिन्दीभाषाका योगदानमहत्वपूर्णहैं।
अतः उपरोक्तउद्देश्यों की पूर्ति के लिए महर्षिमहेश योगीवैदिकविश्वविद्यालय मेंभावातीत ध्यान के साथहिन्दीभाषाकासहज एवंसरलता के साथ अध्ययन करायाजाताहैजिससेछात्र अध्ययन करने के बादविभिन्न क्षेत्रोंमेंरोजगार के अवसरतोप्राप्तकरताहीहै।साथहीसाथवहसमाजमेंअपनी एक अलग एवंविशिष्टपहचानबनाताहै।

Name of the Course	Name of the Department
शास्त्री	**ज्योतिष-विभाग**

महर्षिमहेश योगीवैदिकविश्वविद्यालय की स्थापना १९९५ मेंहुई।विश्वविद्यालय के ज्योतिष-विभागमेंसम्प्रति शास्त्री कक्षायेंसंचालितहैं, जिसमेंसिद्धान्त,संहिता,
ज्योतिषके विशद् अध्ययन के साथ-साथअनिवार्य रूपसेछात्रोंकोमहर्षिवेदविज्ञान, के माध्यम सेपरमपूज्य महर्षिजी के सिद्धान्तोंकासैद्धान्तिक एवंप्रायोगिकपक्ष भीपढ़ायाजाताहै।वैदिक वाङ्मय, सामान्य त्रिवर्षीय ज्योतिष शास्त्री करने के उपरान्तछात्र ज्योतिष शास्त्र काजानकारहोजाताहै, नौकरी के क्षेत्र मेंप्रयासकरनेपरवह धर्मगुरु, धर्मशिक्षक एवंकनिष्ठशिक्षक बन सकताहै।यदिकिसीकारणवशवह परमपूज्य महर्षिजी के अनुसारज्योतिषसम्बन्धीचेतना के स्पन्दन शरीरमेंउपलब्ध हैं।ज्योतिष के स्पन्दनोंसे शरीर के

Name of the Course	Name of the Department
आचार्य	**ज्योतिष-विभाग**

महर्षिमहेश योगीवैदिकविश्वविद्यालय की स्थापना १९९५ मेंहुई।विश्वविद्यालय के ज्योतिष-विभागमेंसम्प्रतिआचार्य कक्षायेंसंचालितहैं, जिसमेंसिद्धान्त, संहिता, होरा-स्कन्धत्रय
ज्योतिषके विशद् अध्ययन के साथ-साथअनिवार्य रूपसेछात्रोंकोमहर्षिवेदविज्ञान, के माध्यम सेपरमपूज्य महर्षिजी के सिद्धान्तोंकासैद्धान्तिक एवंप्रायोगिकपक्ष भीपढ़ायाजाताहै।वैदिक वाङ्मय, सामान्य ज्योतिषमेंआचार्यकरछात्र ज्योतिषकाउत्कृष्ट विद्वान् होजाताहै।विश्वविद्यालय अनुदानआयोग की कनिष्ठ अध्येतावृत्ति (श्रत्ए) परीक्षाउर्त्तीणकर शोधवृत्तिप्राप्तकरतेहुए अनुसंधान (विद्यावारिधि)
परमपूज्य महर्षिजी के अनुसारज्योतिषसम्बन्धीचेतना के स्पन्दन शरीरमेंउपलब्ध हैं।ज्योतिष के स्पन्दनोंसे शरीर के
जिसभागकीरचनाहुईहैउसकोआँग्लभाषामेंवेसलगैंग्लियाकहतेहैं।ज्योतिषकाप्रभावआत्मचेतनामेंजाग्रतकरकेसभीग्रहों की शान्ति के द्वाराज्योतिष्मतीप्रज्ञाकाउदय कियाजाताहै। यह अर्थकरीविद्याहै।

Name of the Course	Name of the Department
विद्यावारिधि Ph.D.	**ज्योतिष-विभाग**

महर्षिमहेश योगीवैदिकविश्वविद्यालय मध्यप्रदेशअधिनियमक्रं. ३७, वर्ष द्वारास्थापित एवं यूजीसी की धारा २;ध्द्धके अन्तर्गतसूचीबद्ध हैइसविश्वविद्यालय का लक्ष्य हैआदर्शव्यक्ति, समस्याविहीनसमाज एवंआदर्शभारतकानिर्माणकरना।विश्वविद्यालय के ज्योतिषविभागसेआचार्यकरछात्र ज्योतिषकाउत्कृष्ट विद्वान् होजाताहै।विश्वविद्यालय अनुदानआयोग की कनिष्ठ अध्येतावृत्ति (श्रत्ए) परीक्षाउर्त्तीणकर शोधवृत्तिप्राप्तकरतेहुए अनुसंधान (विद्यावारिधि) करकिसीभीविश्वविद्यालय में अध्यापनकार्यकरसकताहै।

परमपूज्य महर्षि जी के अनुसा रज्योतिष सम्बन्धी चेतना के स्पन्दन शरीर में उपलब्ध हैं। ज्योतिष के स्पन्दनो से शरीर के जिस भाग की रचना को आँग्ल भाषा में ेवेसल गैंग्लिया कहते हैं। ज्योतिष का प्रभाव आत्म चेतना मे ंजाग्रत करके सभी ग्रहों की शान्ति के द्वारा ज्योतिष्मती प्रज्ञा का उदय किया जाता है। यह अर्थकरी विद्या है।

v

Name of the Course	Name of the Department
M.A. (Education)	**Education Departement**

CO-1 Action research is organized investigative activity, aimed towards the study and constructive chance of given Endeavour by individual or group concerned with change and improvement

CO-2 The process by which practitioner attempts to study their problems in order to guide , correct and evaluate their decision and actions is what a number of people have called action research.

CO-3 The researcher has not to face the problem of sampling in such research; hence he can understand the problem well.
CO-4 Action research focuses on immediate problems and their solution.
CO-5 The problem is related to teacher's routine work in such type of research hence he takes more interest in it.
CO-6 This type of research provides strong system to school

Name of the Course	Name of the Department
M.Sc (CS)	**Department of computer science**

A graduate with a M.S. in Computer Science will have the ability to
Co 1 communicates computer science concepts, designs, and solutions effectively and professionally;

Co 2 apply knowledge of computing to produce effective designs and solutions for specific problems; Co3 identify, analyze, and synthesize scholarly literature relating to the field of computer science; and Co 4 use software development tools, software systems, and modern computing platforms

Co 5 student can help in making correlation between the concepts with the pupil environment.

Co 6 key element of lesion plan can be easily explained by the students
CO1: The course curriculum is updated as per the industry requirements and provide students with theoretical knowledge and practical skills.

CO7: In this course including software engineering, network technology, C, C++, Java, VB.Net, ASP.Net, Multimedia, Data warehousing and Mining.

CO8: The course is specially designed looking at the needs of a computer science professional to be employed in computer and IT Industries as system analyst, system manager, software consultant, software developer, software testing and quality assurance engineer, network administrator, researcher, Teacher etc.

CO9: This course provide technical standard as platform for employment in Govt. and private sector.

Name of the Course	Name of the Department

M.A. Sanskrit	**Sanskrit Department**

1. उद्घोषक, उपदेषक बनकर मानव सेवा के प्रति समाज को प्रेरित करना।
2. भाषा षिक्षक बनकर छात्रों को ज्ञान देना।
3. राज्य प्रशासनिक सेवाओं में महत्वपूर्ण उत्तरदायित्व का निर्वाह करना।
4. सैनिक स्कूलों में षिक्षण के दायित्व को अपनाना।
5. भाषागत संगणक षिक्षक बनकर वृत्ति प्राप्त करना।
6. भारतीय सेना में धर्मगुरु के पद का निर्वाह कर देष सेवा करना।
7. स्नातक पास छात्र–छात्राएं रेलवे, पुलिस तथा अन्य राज्यों की सामान्य सेवाओं में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते है।
8. विश्व के अनेक देषों में भाषा षिक्षक बनकर भारत के अतुल्य वैदिक ज्ञान का विष्व पटल पर गौरव बढ़ा सकते है।
9. साहित्यकार, समाज सुधारक बनकर समाज को आदर्ष दिषा प्रदान करना।
10. स्कूल, कॉलेज, विष्वविद्यालय में संस्कृत अध्यापन द्वारा महानतम् भारतीय सभ्यता तथा संस्कृति के गुणों को छात्र छात्राओं एवं नागरिकों में जागृत करना।
11. सामाजिक एवं राष्ट्रीय, एकता, समरसता, परस्पर सद्भाव, मैत्री तथा भाईचारे के विभिन्न गुणों के प्रति छात्र–छात्राओं को प्रेरित करना।
12. भाषा टाईपिस्ट बनकर भारत के समृद्ध साहित्य की सेवा करना।
13. भाषा अनुवादक बनकर अन्य भाषीय जनों को संस्कृत साहित्य के गौरव पूर्णज्ञान से अवगत करना।
14. राष्ट्र तथा समाज में आदर्श मानव के गुणों का विकास।
15. पुरातन एवं सनातन हिन्दू सभ्यता के विविध आयमों का समाज को ज्ञान देना।
16. सामाजिक, आध्यामिक, राष्ट्रीय मूल्यों के विकास तथा उनके पालन के लिये नागरिकों को प्रेरित करना।
17. ध्यान, आध्यात्मिक, धार्मिक व सात्विक जीवन के प्रति लोगों को प्रेरित करना।
18. जीवन उपयोगी आदर्ष संस्कारों एवं आदर्ष नागरिक गुणों का जन–जन में विकास करना।

Name of the Course	**Name of the Department**
(एम.एस.डब्ल्य	**Department of Social Work**

विश्वविद्यालय के कला संकाय का दूसरा बड़ा परास्नातक पाठ्यक्रम समाज कार्य,(एम.एस.डब्ल्यू)वर्तमान परिवेश में विद्यार्थी को विषय के सैधान्तिक ज्ञान से आवश्यक व्याहारिक और प्रयोगात्मक ज्ञान की आवश्यकता है ताकि वह ऐसे पाठ्यक्रम की डिग्री प्राप्त कर अपनी जीवकोपार्जन की योग्यता हासिल कर सके। इसी उद्देश्य के अंतर्गत कला संकाय वर्तमान में पाठ्यक्रम से उत्तीर्ण विद्यार्थियों को विभिन्न सामाजिक संस्थानों और गैर सामाजिक संगठनों द्वारा अपने यहां कार्य करने हेतु वरियता दी जाती है विगत वर्षों में

१. विद्यार्थियों को इस विषय से व्यक्तिगत संतुष्टि व सामाजिक समायोजन में सहायता मिलती है।
२. पर्यावरण में आशोहन करने में विद्यार्थियों को सक्षम बनाता है।
३. समाज की समस्या को पूर्ण रूप से विद्यार्थी अवगत होते हैं।
४. विद्यार्थी समाज कार्य से अपना खुद का स्वयंसेवी संस्थान (NGO) में अपना कार्य कर सकते हैं।
५. विद्यार्थी अपने विकृत योग्यता को पुनः स्थापन में सहायता प्रदान करते हैं।

Name of the Course	**Name of the Department**
PGDCA	**Department of Computer Science**

Sample course outcome of lesson plan in teaching learning strategies

Co 1 Lesson planning makes the work regular, organized and more systematic to the student in the teaching learning aspect
Co 2 it include confidence and the ability of visualization in the students to teach in a better ways
Co3 Students are able to know about the lesion plan
Co 4 student can identify the characteristics of a good lesion plan
Co 5 student can help in making correlation between the concepts with the pupil environment.
Co 6 key element of lesion plan can be easily explained by the students
CO7: This course provides technical standards to students.
CO8: Technical standards are very important for modern office automation work.
CO9: In this course students can derived technical skills in IT sectors.
CO10: Strategic and critical thinking in relation to computer technology and information technology.

Name of the Course	**Name of the Department**
(Shastri)	**Philosophy (Shastri)**

CO1. आत्म दीपो भवः की अवधारणा को चरित्रार्थ कर अपना और समाज का चहुँमुखी विकास कर करना।
CO2. कर्मयोग और ज्ञानयोग को अपनाकर समाज में अपना एक अलग स्थान प्राप्त कर सकता है।
CO3. पंचमहाव्रतों और नैतिक सद्गुणों को अपनाकर समाज में शान्ति और सदभाव को बनाये रखने में योगदान दे सकता है।
CO4. धार्मिक/आध्यात्मिक शिक्षा के क्षेत्र में शिक्षक बनकर अपना स्थान बना सकते है।
CO5. विश्व शान्ति एवं सांस्कृतिक कार्यक्रमो, संगठनों में सक्रिय भाग लेकर विश्व विकास एवं स्व विकास में अहम भूमिका का निर्वाहन कर सकता है।

Name of the Course	Name of the Department
Education Department	**Department of Education**

Sample course outcome of lesson plan in teaching learning Strategies

Co1 Lesson planning makes the work regular, organized and more systematic to the students in teaching learning aspects.

Co2 It induces confidence and the ability of visualization in the students to teach in a better ways.

Co3 Students are able to know about the lesson plan.

Co4 Student can identify the characteristics of a good lesson plan.

Co5 Student can help in making correlation between the concepts with the pupil environment.

Co6 Key Elements of lesson Plan can be easily explained by the students.

Credits

1. Four Theory periods of forty Minutes per week in 2 nd Semester.
2. Four Practical period of forty Minutes per week in 2nd semester.

Name of the Course	Name of the Department
	Department of Computer Science

Computers are extremely helpful in the distribution of information and knowledge now a day the world is going to digitatized, so the most important role of the computer in the field of education. In our universities design various computer course on the bases of market requirement. Maharishi Vedic Science is essential subject include in every program Sample course outcome of lesson plan in teaching learning strategies

Col 1 Lesson planning makes the work regular, organized and more systematic to the student in the teaching learning aspect

Co 2 it include confidence and the ability of visualization in the students to teach in a better ways

Co3 Students are able to know about the lesion plan

Co 4 student can identify the characteristics of a good lesion plan

Co 5 student can help in making correlation between the concepts with the pupil environment.

Co 6 key element of lesion plan can be easily explained by the students

Name of the Course	Name of the Department
Economics	**Department of Social Science**

CO1. Specialized knowledge and application of skills. Students are expected to develop critical and quantitative thinking skills
CO2. Communication skills students are expected to be able to communicate effectively in written, oral and graphical farm about specific issues and to formulate well organized written arguments that state assumptions and hypotheses supported
CO3. To develop critical approach to economic issues among students.
CO4. To develop research aptitude.

Name of the Course	Name of the Department
Shastri Sanskrit	**Department of Sanskrit**

Course Outcomes:-

1. उद्घोषक, उपदेषक बनकर मानव सेवा के प्रति समाज को प्रेरित करना।
2. भाषा षिक्षक बनकर छात्रों को ज्ञान देना।
3. राज्य प्रशासनिक सेवाओं में महत्वपूर्ण उत्तरदायित्व का निर्वाह करना।
4. सैनिक स्कूलों में षिक्षण के दायित्व को अपनाना।
5. भाषागत संगणक षिक्षक बनकर वृत्ति प्राप्त करना।
6. भारतीय सेना में धर्मगुरु के पद का निर्वाह कर देष सेवा करना।
7. स्नातक पास छात्र–छात्राएं रेलवे, पुलिस तथा अन्य राज्यों की सामान्य सेवाओं में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते है।
8. विश्व के अनेक देषों में भाषा षिक्षक बनकर भारत के अतुल्य वैदिक ज्ञान का विष्व पटल पर गौरव बढ़ा सकते है।
9. साहित्यकार, समाज सुधारक बनकर समाज को आदर्ष दिषा प्रदान करना।
10. स्कूल, कॉलेज, विष्वविद्यालय में संस्कृत अध्यापन द्वारा महानतम् भारतीय सभ्यता तथा संस्कृति के गुणों को छात्र छात्राओं एवं नागरिकों में जागृत करना।
11. सामाजिक एवं राष्ट्रीय, एकता, समरसता, परस्पर सद्भाव, मैत्री तथा भाईचारे के विभिन्न गुणों के प्रति छात्र–छात्राओं को प्रेरित करना।
12. भाषा टाईपिस्ट बनकर भारत के समृद्ध साहित्य की सेवा करना।
13. भाषा अनुवादक बनकर अन्य भाषीय जनों को संस्कृत साहित्य के गौरव पूर्णज्ञान से अवगत करना।
14. राष्ट्र तथा समाज में आदर्श मानव के गुणों का विकास।
15. पुरातन एवं सनातन हिन्दू सभ्यता के विविध आयमों का समाज को ज्ञान देना।
16. सामाजिक, आध्यामिक, राष्ट्रीय मूल्यों के विकास तथा उनके पालन के लिये नागरिकों को प्रेरित करना।
17. ध्यान, आध्यात्मिक, धार्मिक व सात्विक जीवन के प्रति लोगों को प्रेरित करना।
18. जीवन उपयोगी आदर्ष संस्कारों एवं आदर्ष नागरिक गुणों का जन–जन में विकास करना।

Name of the Course	Name of the Department
शास्त्री स्तर	**वेद–विभाग**

महर्षि महेश योगी वैदिक विश्वविद्यालय की स्थापना १९९५ में हुई। विश्वविद्यालय के वेद-विभाग में सम्प्रति शुक्लयजुर्वेद संचालित है जिसमें शास्त्री कक्षा में शुक्लयजुर्वेद का शुक्लयजुर्वेद के विशद् अध्ययन के साथ-साथ अनिवार्य रूप से छात्रों को महर्षि वेद विज्ञान, के माध्यम से परम पूज्य महर्षि जी के सिद्धान्तों का सैद्धान्तिक एवं प्रायोगिक पक्ष परम पूज्य महर्षि जी के अनुसार यजुर्वेद के चेतना का गुण प्रवाहमयिता है। यजुर्वेद सम्बन्धी चेतना के स्पन्दन शरीर में उपलब्ध है। यजुर्वेद के स्पन्दनों से शरीर के जिस वैदिक वाङ्मय के उपर्युक्त विषयों का अध्ययन कर छात्र वैदिक वाङ्मय का उत्कृष्ट विद्वान् हो जाता है तथा आचार्य कक्षा में प्रवेश लेकर आगे का अध्ययन प्रारम्भ कर परम पूज्य महर्षि जी के सत्प्रयासों का ही यह फल है कि न केवल मध्यप्रदेश में , भारत वर्ष में प्रत्युत सम्पूर्ण विश्व में लुप्तप्राय वेदपाठ एवं यज्ञानुष्ठान इत्यादि की क्रियायें

Name of the Course	Name of the Department
शास्त्री स्तर	**यज्ञानुष्ठान-विभाग**

महर्षि महेश योगी वैदिक विश्वविद्यालय की स्थापना १९९५ में हुई। विश्वविद्यालय के यज्ञानुष्ठान-विभाग में सम्प्रति शास्त्री कक्षा में यज्ञानुष्ठान का अध्यापन कराया जाता है, यज्ञानुष्ठान के विशद् अध्ययन के साथ-साथ अनिवार्य रूप से छात्रों को महर्षि वेद विज्ञान, के माध्यम से परम पूज्य महर्षि जी के सिद्धान्तों का सैद्धान्तिक एवं प्रायोगिक पक्ष यज्ञानुष्ठान के उपर्युक्त विषयों का अध्ययन कर छात्र यज्ञानुष्ठान का उत्कृष्ट विद्वान् हो जाता है। तथा आचार्य कक्षा में प्रवेश लेकर आगे का अध्ययन प्रारम्भ कर सकता है। परम पूज्य महर्षि जी के सत्प्रयासों का ही यह फल है कि न केवल मध्यप्रदेश में, भारत वर्ष में प्रत्युत सम्पूर्ण विश्व में लुप्तप्राय वेदपाठ एवं यज्ञानुष्ठान इत्यादि की क्रियायें

Name of the Course	Name of the Department
Economics	**Department of Social Science (Economics)**

Course outcomes

CO1 Many students who pursue a carrier in business must study economics to help better understand why business makes certain decisions based on the current economics state.

CO2 The Department has been highly successful in placing students, which is a reflection on the quality of its students and their training, and the importance of the Department places on this activity.

CO3 Students can better understand the behavior of Indian and World economy. They can know how to participate in our economy and better know behavior of world economy.

CO4 Program provides to the students with knowledge of analyze fiscal and monetary policies of India.

CO5 Students can better understand the behaviour of financial and money market and perform cost-benefit analysis for making investment decisions.

Name of the Course	Name of the Department
Economics	**Department of Social Science (Economics)**

Course outcomes

CO1 Many students who pursue a carrier in business must study economics to help better understand why business makes

CO2 The Department has been highly successful in placing students, which is a reflection on the quality of its students and

CO3 Students can better understand the behavior of Indian and World economy. They can know how to participate in our

CO4 Program provides to the students with knowledge of analyze fiscal and monetary policies of India.

CO5 Students can better understand the behaviour of financial and money market and perform cost-benefit analysis for

Name of the Course	Name of the Department
स्थापत्यवेद	**स्थापत्यवेद**

Course outcomes शास्त्री एवं आचार्य

CO1. स्थापत्यवेद (वास्तुशास्त्र) के माध्यम से समाज के हर व्यक्ति को इसे अपनाने के लिये जागरूक करना।

CO2. स्वयं इसके सिद्धांतों का पालन कर अन्य लोगो को भी इसकी सकारात्मक ऊर्जा शक्ति से अवगत कराना।

CO3. वास्तुशास्त्र की शिक्षा ग्रहण कर किसी भी आर्किटेक्ट व इंजीनियर के साथ मिलकर वास्तु सलाहकार के रूप कार्य कर सकते है।

CO4. आन्तरिक सज्जाकार (इंटीरियर डेकोरेटर्स) के साथ मिलकर कार्य किया जा सकता है।

CO5. स्वयं का कार्यालय खोल कर वास्तु सलाहकार के रूप में कार्य कर सकते है एवं अधिक से अधिक लोगो तक इसका लाभ पहुंचा सकते है।

CO6. वास्तुशास्त्र का क्षेत्र असीमित है इसे आप अपनी योग्यतानुसार कार्य क्षेत्र को बढा सकते है।

Course outcomes विद्यावारिधी

CO1. स्थापत्यवेद (वास्तुशास्त्र) के भवन निर्माण क्षेत्र के किसी भी विषय पर अनुसंधान करके वह उस विषय में पारंगत हो जाता है।

CO2. वास्तुशास्त्र का क्षेत्र विस्तृत है अर्थात् इसके माध्यम से आप कॉलोनी, ग्राम, नगर व प्रांतो की सीमाओं का भौगोलिक रचना के अनुसार कार्य कर सकते है। (सरकारी योजना व राज्य के सीमांकन विभाग के अधिकारियों के साथ प्लांनिंग कर)

CO3. आप किसी भी संस्थान अथवा विश्वविद्यालय में अध्यापन कार्य भी कर सकते है।

CO4. आप अपनी कार्यशालाओं का आयोजन कर सामान्य वर्ग को स्थापवेद (वास्तुशास्त्र) की जानकारी दे सकते है।

CO5. वास्तुशास्त्र के पूर्ण अध्ययन से छात्रों का कौशल-विकास होता है जिससे वह स्वयं दूसरों को रोजगार दे सकता है।

Name of the Course	Name of the Department
विद्यावारिधि स्तर	**वेद–विभाग**

महर्षि महेश योगी वैदिक विश्वविद्यालय की स्थापना १९९५ में हुई। विश्वविद्यालय के वेद-विभाग में सम्प्रति शुक्लयजुर्वेद संचालित है जिसमें विद्यावारिधि करने के लिये प्रवेश परम पूज्य महर्षि जी के अनुसार यजुर्वेद के चेतना का गुण प्रवाहमयिता है। यजुर्वेद सम्बन्धी चेतना के स्पन्दन शरीर में उपलब्ध है। यजुर्वेद के स्पन्दनों से शरीर के जिस वैदिक वाङ्मय के उपर्युक्त विषयों पर अनुसंधान कार्य कर छात्र वैदिक वाङ्मय का उत्कृष्ट विद्वान् हो जाता हैं। विश्वविद्यालय अनुदान आयोग की कनिष्ठ अध्येतावृत्ति (श्रत्) परम पूज्य महर्षि जी के सत्प्रयासों का ही यह फल है कि न केवल मध्यप्रदेश में , भारत वर्ष में प्रत्युत सम्पूर्ण विश्व में लुप्तप्राय वेदपाठ एवं यज्ञानुष्ठान इत्यादि की क्रियायें

Name of the Course	Name of the Department
विद्यावारिधि स्तर	**यज्ञानुष्ठान-विभाग**

महर्षि महेश योगी वैदिक विश्वविद्यालय की स्थापना १९९५ में हुई। विश्वविद्यालय के यज्ञानुष्ठान-विभाग में सम्प्रति यज्ञानुष्ठान का अध्यापन कराया जाता है, जिसमें विद्यावारिधि यज्ञानुष्ठान के उपर्युक्त विषयों पर अनुसंधान कर छात्र यज्ञानुष्ठान का उत्कृष्ट विद्वान् हो जाता है। विश्वविद्यालय अनुदान आयोग की कनिष्ठ अध्येतावृत्ति (JRF) परीक्षा उर्त्तीण कर शोधवृत्ति प्राप्त करते हुए अनुसंधान (विद्यावारिधि) कर किसी भी विश्वविद्यालय में अध्यापन कार्य कर सकता है। यदि किसी कारण वश शासकीय सेवा में नहीं आता है तो अनुष्ठान, प्राणप्रतिष्ठा, षोडश संस्कार, श्रौतयज्ञ, स्मार्तयज्ञ इत्यादि करके जीविकोपार्जन कर सकता है। यज्ञानुष्ठान के सम्यक् अध्ययन से छात्रों का कौशल विकास होता है जिससे वह स्वयं तो जीवकोपार्जन करता ही है दूसरों को भी रोजगार दे सकता है। यज्ञादि के माध्यम से पर्यावरण भी शुद्ध होता है, जिससे सभी मानव जाति का कल्याण होता है।

परम पूज्य महर्षि जी के सत्प्रयासों का ही यह फल है कि न केवल मध्यप्रदेश में , भारत वर्ष में प्रत्युत सम्पूर्ण विश्व में लुप्तप्राय वेदपाठ एवं यज्ञानुष्ठान इत्यादि की क्रियायें सम्प्रति विधिवत् संचालित हो रही हैं।

Name of the Course	Name of the Department
Yoga-Shastri	

Course outcomes

CO1. योग का ज्ञान और योगाभ्यास में पारंगत होकर योग चिकित्सा और समाज के व्यक्तियों के लिये एक स्वास्थ्य रक्षक मित्र बन सकता है।

CO2. शिक्षा के क्षेत्र में योग-शिक्षक बन सकता है।

CO3. योग सम्बंधी लेख पत्र, पत्रिकाओं एवं समाचार पत्रों में लिखकर धर्नाजन कर सकता है। साथ ही जनमानस को स्वास्थ्य रहने के लिये योगाभ्यास रहने की प्ररेणा देकर समाज के विकास में अपना योगदान दे सकता है।

CO4. योगाभ्यास और योग शिक्षा से संबंधित संगठनों द्वारा आयोजित शिविरों संगोष्ठियों में सम्मिलित होकर जनमानस को स्वास्थ्य के जागरूक रहने में योगदान दे सकता